## राजनीति-सिद्धांत की प्रकृति विज्ञान के रूप में—

राजनीति-सिद्धांत एक विज्ञान है, इस बात पर आर्थर बैंटली से लेकर जॉर्ज कैटलिना, डेविड ईस्टन व रार्बट डाल तक विद्वानों द्वारा प्रभावशाली ढंग से जोर दिया गया है। परन्तु समग्र विज्ञान राजनीति-सिद्धांत नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे समस्त राजनीति सिद्धांत विज्ञान नहीं है। यह एक विज्ञान है जहाँ तक कि वह इन संकल्पनाओं व मापदण्डों को स्वीकार करता है जो प्रेक्षणीय व परीक्षणीय दोनों है, और जहाँ तक कि यह विवेक व बुद्धि की आवश्यकताओं को पूरा करता है। सामान्यतः अमेरिकन समाज-विज्ञान अन्वेषकों ने और विशेष रूप व्यवहारवादियों ने राजनीति का एक विज्ञान बनाने का प्रयास किया और इस प्रक्रिया में उस ओर जुटे जिसे 'अवव्याख्यावाद' कहा जा सकता है। राजनीति-सिद्धांत एक विज्ञान है जहाँ तक कि वह हो सकता है व वास्तव में किसी सामाजिक जनसमूह पर प्रयोग किया जाता है तथा यथार्थ विज्ञानों के निर्णायक नियम सीमाओं के भीतर उसी प्रकार प्रयोज्य है जैसे कि किसी सामाजिक विज्ञान में। विज्ञान के रूप में राजनीति-सिद्धांत मात्र एक सामाजिक विज्ञान है। उस सीमा तक, वह एक विज्ञान है, एक आदि विज्ञान जैसा कि इसकी अरस्तु ने व्याख्या की थी। यह एक विज्ञान है जहाँ तक कि उसके निष्कर्ष, अध्ययन प्रयोगों आदि उन लक्षणों के अनुसार निकाले जाते है जो विज्ञान के किसी भी सामान्य परिभाषा के साथ चलते है। राजनीति को एक विज्ञान बनाने के लिए तथा राजनीति को यथार्थ विज्ञान के लिए यथा तकनीकें व साधन ढूँढने के लिए अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं है कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस प्रक्रिया में कोई राजनीति-सिद्धांत शेष रहता है अथवा नहीं।